IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डॉ0 आर.पी.'राज' के ग़ज़ल–संग्रह 'इश्क पे नाज़' में प्रेम निरूपण

KIRAN D/o SH. DILBAG SINGH

STUDENT

GJU UNDER COLLEGE HISAR

हिन्दी साहित्य एक सागर की भांति है जिसमें न जाने कितने गोताखोर रूपी साहित्यकार छलांग लगाते है; और उसमें मोती के समान कृतियॉ ढूंढ कर साहित्यिक जगत को भेंट करते है। ऐसे ही उभरते साहित्यकारों में एक छोटा–सा नाम डॉ0 आर.पी. 'राज' है, जिनका पूरा नाम डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद उर्फ राज खन्ना है। ये हरियाणा के हिसार जिले के गॉव मिगनी खेड़ा से है; जो कॉलेज प्राध्यापक के रूप में कार्यरत है। इनका ग़ज़ल–संग्रह 'इश्क पे नाज़' युवाओं के धड़कते दिल की दास्तां कहता है। डॉ0 आर.पी.'राज' के ग़ज़ल–संग्रह 'इश्क पे नाज़' में प्रेम निरूपण पर प्रकाश डालने से पूर्व हम ग़ज़ल शब्द एवं प्रेम निरूपण शब्द के अर्थ, स्वरूप को परिभाषित कर लेते है।

ग़ज़ल शब्द कहते ही इश्क, माशूका, शेर, काफिया, रदीफ, मतला और मकता जैसे शब्द जहन में स्वाभाविक आते हैं । राजपाल शब्द कोश में ग़ज़ल शब्द का अर्थ है– ' ऐसी पद्यात्मक रचना जिसमें नायिका के सौंन्दर्य एवं उसके प्रति प्रेम का वर्णन हो।'[1]

साधरण रूप से प्रेमिका से गुफ्तगू करना, सुंदर औरत से बातचीत करना के रूप में देखा गया है। ग़ज़ल मूल रूप से अरबी भाषा का शब्द है। इश्क में दर्द से कराहना और बिछुड़न की टीस है। मिलन का क्षणिक सुख और फिर उसकी सिर्फ स्थायी याद बचती है । जिसकी तड़फ ही ग़ज़ल को जन्म देती है। इसी सन्दर्भ में डॉ0 वेद 'व्यथित' ने ग़ज़ल–संग्रह की भूमिका में लिखा है–

'' मादा क्रौंच पक्षी की वेदना ने जिस प्रकार विश्व में काव्य को जन्म दिया तो वही परंपरा अरब में जाते.जाते ग़ज़ल बन गई क्योंकि मोहम्मद साहब से पहले वहां शैव दर्शन की परंपरा के प्रमाण आज भी उपलब्ध हैं फिर इश्क के इर्द.गिर्द घूमते घूमते आधुनिक काल तक आते–आते ग़ज़ल में बहुत सारे बदलाव आते गए।''[2]

भाक्तिकाल में निर्गुण संत कवि कबीर ने भी ग़ज़ल को भक्ति की ओर मोड़ने का भरपूर प्रयास किया था। आज आधुनिक समय में ग़ज़ल जीवन की रोजमर्रा की जरूरतों, उनकी मजबूरियां तथा व्यवस्था के विद्पों पर लिखी जाने लगी हैं। इश्क एक ऐसा अहसास है जो हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसे न केवल अपने आप में एक भाव या एक अभिव्यक्ति माना जाता है, बल्कि इसके माध्यम से हम दूसरों से संबंध बनाते हैं और अपनी जिंदगी को अधिक उत्तम बनाने की कोशिश करते हैं। प्रेम एक ऐसी भावना होती है जो हमें जीवन में सबसे करीब लाती है। प्रेम के माध्यम से हम दूसरों के साथ अपनी भावनाएं और विचारों को साझा करते हैं, जिससे हमारा रिश्ता और मजबूत होता है। इसी सन्दर्भ में इश्क और प्रेम के मध्य अंतर प्रकट करते हुए डॉ0 वेद 'व्यथित' ने ग़ज़ल–संग्रह की भूमिका में लिखा है–

''इश्क एक अहसास होता है जो हमें कुछ करने के लिए मजबूर करता है, जबकि प्रेम एक स्थिति होती है जिसमें हम अपने संबंध का आनंद लेते हैं और उसे संभालते हैं।''[3]

प्राचीन समय से ही हिन्दी साहित्य में प्रेम शब्द का प्रयोग होता रहा है। वेदों, उपनिषेदों, रामायण, महाभारत से लेकर विद्यापति, जायसी, कबीर, मीरा, रसखान, घनानंद से होते हुए नई कविता तक प्रेम अपने विविध रूपों में देखा गया है। प्रत्येक साहित्यकार ने प्रेम को अपनी ही शैली में निरूपित किया है। ग़ज़लों में प्रेम निरूपण पर प्रकाश डालने से पूर्व हमें प्रेम शब्द की परिभाषा को समझ लेते है।

प्रेम का अर्थ–

''संक्षिप्त हिंदी शब्द सागर के अनुसार – प्रेम वह भाव जिसके अनुसार किसी दृष्टि से अच्छी लगने वाली चीज या व्यक्ति को देखने, पाने, भोगने या सुरक्षित करने की इच्छा है।''[4]

डॉ. बच्चन सिंह ने प्रेम की परिभाषा देते हुए कहा है – ''प्रेम वह अनुकूल वदेनीय मनोवृत्ति है जो किसी व्यक्ति अन्य जीव या पदार्थ के सौन्दर्य, गुण, शील, सामीप्य आदि के कारण उत्पन्न हाती है।''[5]

मानविकी पारिभाषिक काशे के अनुसार – ''किसी के प्रति प्रसन्नतामय गम्भीर आकर्षण का भाव प्रेम कहलाता है।''[6]

जब हम किसी से प्रेम करते हैं, तो हमें उनके लिए समय, संवेदनशीलता, समझदारी और ईमानदारी जैसी गुणों की आवश्यकता होती है। इससे हम दूसरों के साथ सहज हो जाते है। यह एक ऐसा अनुभव है जो कि असीमित है और जिसे व्यक्त करने के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं। प्रेम एक ऐसा अहसास है जो हमें आनंद देता है और हमारे जीवन में नई ऊर्जा भरता है। यह जीवन का एक अनुभव है जो हमें जीने का मकसद बना देता है। प्रेम एक ऐसी प्रक्रिया है जो हमें एक–दूसरे से जुड़ने की ताकत देती है और हमें दूसरे इंसानों के साथ संवाद करने की क्षमता प्रदान करती है। इसका अनुभव करना हमें जीवन की सबसे खुशनुमा चीजों में से एक को जानने की अनुमति देता है। जो अनंत है, जो न केवल आपकी जिंदगी को चमकाता है बल्कि आपकी आत्मा को भी उत्तेजित करता है। इश्क का मतलब होता है प्रेम, और प्रेम का मतलब होता है एक तरह से आदर्श रूप से किसी को पसंद करना।

डॉ0 राज के **'इश्क पे नाज़'** ग़ज़ल–संग्रह में प्रेम के विभिन्न पहलुओं को बताया गया है। कुछ ग़ज़ल इश्क को एक दर्द भरी अनुभूति के रूप में दर्शाते हैं जबकि दूसरे इसे एक सुखद अनुभव के रूप में देखते हैं। ग़ज़लकार की जिन्दगी में बहुत उतार.चढाव आए लेकिन वे अवने सफर पर चलते रहे । उन्हें न तो मंजिल की तलाश थी और न ही किसी के प्यार की आश। अपने घर में प्यार तो बचपन से ही मिलता रहा है। लेकिन उनके जीवन में जब– जब मुसीबतें आई तब.तब कल्पना ने कलम का साथ दिया और अपनी आप बीती को शब्दों के साथ जोड़तें गए । प्रेमी की कोई उम्र सीमा नही होती। लाखों ऐसे प्रेमी होंगे जो अपने भाव किसी के

सामने तो नहीं कह पाते लेकिन कलम के साथ दोस्ती करके कागज से बनी डायरी को अपनी प्रेमिका बना लेते है। अपनी डायरी या किताब के पहले या अंतिम पृष्ठ को सपनों की महबूबा समझ कर न जाने कितनी बार बतलाते है । अपने घर वालों और दोस्तों से बचा के न जाने कहाँ–कहाँ छुपा के रखते है। इनकी गजलें केवल प्रेमी के लिए है, जो केवल प्रेम के सिवा कुछ नही समझता। ये ग़ज़ल उनके लिए उमंग भरी होगी जो अभी–अभी प्रेम के तुफां में फंसे है। जैसे –

''प्यार के तुफां में हम घिरे हैं, चाहा निकलना, मुश्किल बड़ा है ।

इश्क–मोहब्बत से कैसे निकले, राह में चाहत का पर्वत खड़ा है ।''[7]

जो प्रेमी प्रेम की पींग तो चढ़ चुके है लेकिन प्रेम को हासिल नहीं कर पाए उन्हें अपना दर्द नजर आएगा । क्योंकि इश्क केवल गम ही देता है । एक पल की खुशी सौ साल तक का गम दे जाती है और इस तरह का गम देना जमाने का दस्तूर है कि जमाना दो प्रेमियों का सुख कभी नहीं देख सकता और इसीलिए जमाने की नजरें उन पर टिक जाती हैं । प्रेम की इस सच्चाई को राज खन्ना ने इस प्रकार व्यक्त किया है जैसे–

''एक पल की खुशी देके वो, सौ साल के गम दे गए ।

वो जाते–जाते बड़े प्यार से, गम छुपाने को कह गए ।।

भंवरे की तरहा मरते थे, पतंगे की तरहा जलते थे ।

एक फूल हाथ में देके मुझे, कांटो की सेज वो दे गए ।।''[8]

एक अन्य उदाहरण देखिए–

''जमाने भर के लोगों ना उठाओ नजरें, हम तो पहले से मरे हैं।

दिल की दुनियॉ ना जलाओ यारों, हम तो पहले से जले हैं ।।''[9]

समाज ने इश्क या प्रेम को कभी सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा। पाश्चात्य संस्कृति के बदलते परिवेश ने प्रेम की परिभाषा ही बदल दी है। शुरू से ही प्रेम एक ऐसा अनुभव रहा है जो अनगिनत लोगों के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रेम को आज वासना के रूप में

देखा जाता है। अपनी हवस को पूरा करने के लिए लोग प्रेम का सहारा लेते है। ग़ज़लकार ने दिल्ली शहर में निर्भया हत्या कांड जैसे ज्वलंत मुद्दों की पीड़ा को शब्दबद्व किया है। प्रायः देखने में पाया गया है कि प्रेम की आड़ लेकर हमारे अपने ही हमें धोखा दे जाते है। आज की स्थिति यह है कि हमारे बच्चे अपने घर के लोगों से ही भयभीत है। शहर की सड़के तो बाद की बात है; वे अपने घर में ही महफूज़ नहीं है। जैसे राज की ग़ज़ल का एक उदाहरण दृश्ट्व्य है –

''जमाना बदल गया है, यकीन कीजिए

मैं नहीं बदला, तुम नहीं बदले

मगर हम बदल गए है, यकीन कीजिए

जो रातों को अकेले निकलते थे अक्सर।

वे आज घर में ही महफूज़ नही, यकीन कीजिए।''[10]

प्रेम का एक महत्वपूर्ण विशेषता होता है कि यह एक दो तरफे का रिश्ता होता है। यह अर्थ है कि दोनों तरफ के व्यक्ति में से हर एक को एक दूसरे के प्रति आकर्षण होता है। इस आकर्षण के कारण, दोनों तरफ के व्यक्ति एक दूसरे के साथ अपने भावों को साझा करने का इच्छुक होते हैं। इश्क एक ऐसा अनुभव है जो शब्दों से संवेदनशीलता को व्यक्त करने के लिए असमर्थ होता है। इसे बस महसूस किया जा सकता है। इश्क एक आत्मीय सम्बन्ध है जो दो लोगों को जोड़ता है और उन्हें एक–दूसरे से अलग नहीं करने देता है। इश्क का एक अन्य पहलू है विरह। विरह उस समय होता है जब एक व्यक्ति अपने प्रेमी से अलग हो जाता है। विरह का अनुभव दुखद होता है और इसे समझना मुश्किल होता है। वह अपना दर्द में कराह उठता है–

'' कोई जब भी मुझे, अपना सा लगता है।

चला जाता है फिर सपना सा लगता है।।

आंखों के रस्ते, दिल में जो उतरते हैं।

नए नगमों का फिर, तराना सा लगता है

गले लगाकर मुझे, वो प्यार करते थे।

आज वो पल फिर..जमाना सा लगता है।''[11]

इश्क और प्रेम एक दूसरे से गहरी ताल्लुकात हैं। इश्क से प्रेम उत्पन्न होता है और प्रेम से हमें अपने आसपास की दुनिया के बारे में जानने की ताकत मिलती है। इश्क एक ऐसी चीज है जो जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करती है। इसे एक भावना या एक संवेदना के रूप में व्यक्त किया जा सकता है जो दिल में उठती है। जो हम सभी जीवन में एक बार तो जरूर करते हैं। प्रेमी अपने प्रेमिका से अलग होने के बाद बीते हुए पल याद करता है। उस समय जब प्रेमिका उसके पास होती है, तब वह उसे देखता रहता है, लेकिन जब जुदा होते है तो उसे अफसोस होता है। जैसे डॉ0 राज ने अपनी एक ग़ज़ल में लिखा है –

''मेरी जिंदगी की उस घडी का, मुझे अफसोस था ।

बारिश में हम एक साथ, लब मेरा खामोश था ।।

वो साथ में बैठे, तन को उसने धीरे से छुआ ।

छूते मगर हाथ मेरा, न जाने क्यों बेहोश था।।''[12]

इश्क के बारे में न केवल शायरों ने अपनी शेरों और ग़ज़लों के माध्यम से व्यक्त किया है, बल्कि यह अनेक साहित्यिक रचनाओं, संगीत, फिल्मों और अन्य कलाओं में भी दिखाई देता है। इश्क का निरूपण असंभव है, क्योंकि इसे जाना जा सकता है सिर्फ उस व्यक्ति के द्वारा जो इसे अनुभव करता है। हालांकि, इश्क का मतलब है दूसरे के प्रति गहरी आकर्षण और समर्पण। इश्क का महत्वपूर्ण अंग है उत्साह और उत्साह जीवन के लिए आवश्यक है। यह आपको जीवन में खुशहाल रखने में मदद करता है और आपको अपने जीवन को और भी उत्साहवर्धक बनाने

में मदद करता है। इश्क के संग आने से, आपके दिल में जगह कम होती है और आप अपने पार्टनर को अपने दिल का एक हिस्सा बनाते हो। यह एक अत्यंत अद्भुत अनुभव होता है जो आपको अपने जीवन के अनुभवों का एक नया आयाम देता है। जवानी का जोश और दिल में उठ रही तरंगे हर नौजवान की कलम को मचलने के लिए मजबूर करती है। इसी मजबूरी ने राज खन्ना से भी बहुत सी रचनाएं करवा ली हैं जिनमें उनकी तड़पनए बेवफाई मिलन की उत्कंठा और इसकी आबादियों में बर्बादियों दोनों का जिक्र है। जैसे–

'' गम के आंसू पीने वालो, लो खुशी का जाम लो।

भूलकर अपने गमों को ना किसी का नाम लो।।

गाकर मेरे संग दामन, तुम हंसी का थाम लो।

भूलकर अपने गमों को ना किसी का नाम लो।।''[13]

आशिक की यह विशेषता होती है कि वह अपनी माशूका को हर हाल में खुश देखना चाहता है। उसके लिए बेशक वह अपने गमों को आंसुओं की तरह पीता रहे और अपने आंसू को माशूका की खुशी में भूल जाए । माना के वह पूरी तरह से टूट जाता है। अपनी प्रेमिका को पाना वह अपना हक सझता है; लेकिन जब उसे अपना इसी को राज खन्ना ने इस तरह व्यक्त किया है–

''टूट जाता है दिल जब गुजरता हूँ मैं,

उस गली, शहर से, मोहल्ले से, घर से

आँखों पे छाता है अँधेरा मेरे

रोशनी में उनकी जब गुजरता हूँ मैं

हक था जो हमारा मिला न हमें,

देख तस्वीर उनकी सहम जाता हूँ मैं, ''[14]

प्रेम को पाने के लिए एक प्रेमी न जाने क्या–क्या खाली पुलाव बनाता रहता है। वह उसके लिए न जाने कितनी शायरी, गीत, शेर, कविताएँ लिखता है। जैसे दूध का जला छाछ को भी फूंक मारकर पीता है । उसी तरह इश्क में धोखा खाया हुआ आशिक हर प्यार को धोखा ही समझने लगता है। वह अपनी प्रेमिका से कहता है कि मेरे मरने के बाद ही मेरे गीत को गाना। आज तो आपको मैं बेवफा लगता हूँ; लेकिन जब तुम्हें एक दिन अहसास होगा कि मैं बेवफा नहीं था। जब आपको पता चले तो शमशान में आकर ऑसू बहाना। अगर रात को नींद न आए तो मेरी ग़ज़लों से अपना दिल बहलाना सनम। वह अपनी विरह संवेदना से कह उठता है–

मरने के बाद मेरेए गीत गाना सनम।

मेहमां हूं मैं पल का फिर सुनाना सनम।

नींद आए कभी ना तुम्हें रात को–2

मेरी गजलों से दिल बहलाना सनम।

हर जाई न था, जब लगे ये पता–2

शमशां में आके, आंसू बहाना सनम ''[15]

सच्चा प्रेमी अपने प्यार को कभी धोखा नहीं देता और नहीं उससे किसी प्रकार की कोई अपेक्षा करता है। यहां ग़ज़लकार ने अपने दर्द को अपनी प्रेमिका के सामने कहा है कि उसे अपने इ्श्क पर ऩाज है क्योंकि उसने अपनी जिंदगी में कभी भी किसी लड़की को धोखा नहीं दिया और ना ही किसी से वफा की अपेक्षा की। मैं तो अपनी ही जिंदगी में जीना चाहता था। अपनी कल्पना की दुनिया में अपनी प्रेमिका के साथ रहना चाहता हूं। वह अपने गम अपने अंदर ही छुपाना चाहता है। वह नहीं चाहता कि वह किसी को सुनाए, क्योंकि सच्चा प्रेमी कभी भी अपनी प्रेमिका की बुराई नहीं करता। प्रेम को पाना अपनी किस्मत का खेल समझता है। इसी प्रकार उनको अपने इ्श्क पर ऩाज है जो हर प्रेमी या आशिक करता है। वे कहते है कि उन्हें नहीं पता कि किसी ने उनको प्यार किया या दिल्लगी की। वे तो बस इतना ही कहते है–

''इश्क पे नाज है हमको, किया दगा न किसी से ।

सिर्फ प्यार ही तो माँगा, न मांगी वफा किसी से ।।

शोख अपने भी थे महबूबए कई जमाने की तरह ।

अपने में ही छुपा लिए हमने न कहा किसी से ।।''[16]

वस्तुतः कहा जा सकता है कि डॉ0 राज की ग़ज़ले एक प्रेमी की संवेदना को सार्थक रूप प्रदान करती है। प्रेमी अपनी प्रेमिका को पाने के लिए न जाने कितने प्रयास करता है लेकिन कहते हैं कि प्रेम, इश्क और प्यार शब्द ही अपने आप में अधूरे हैं वैसे ही प्रेमी और प्रेमिका का मिलन भी अपने आप में अधूरा रहता है। प्रेमी की पीड़ा और दर्द को ग़ज़ल के माध्यम से दर्शाया है। कहते हैं कि प्रेम को निरूपण नहीं किया जा सकता क्योंकि उसे केवल महसूस किया जा सकता है वैसे ही राज की ग़ज़लों को पढ़ने के बाद ही आप प्रेम की आईने में अपने आप को देख सकते हैं। प्रेम को लेकर वर्तमान समाज की परिस्थितियॉ और हरियाणा जैसे प्रदेश में प्रेमी और प्रेमिका का वध इस बात को दर्शाता है। लोक लाज के भय से प्रत्येक वर्ष न जाने कितनी प्रेमी जोंडों को मार दिया जाता है या वे खुद आत्म हत्या कर लेते है। अतः डॉ0 राज अपनी ग़ज़लों के माध्यम से प्रेमियों को सन्देश देते है कि न तो समाज ने प्रेम को पहले स्वीकार किया और न अब कर रहा है। किसी को पाना ही प्रेम नहीं है बल्कि अपनो को और एक दूजे को खुशी देना ही सच्चा प्रेम है।

सन्दर्भ – सूची

1 डॉ0 हरदेव बाहरी, राजपाल हिन्दी शब्दकोश पृष्ठ संख्या –203

2 डॉ0 आर.पी.'राज', 'इ्श्क पे नाज़' की भूमिका, पृष्ठ संख्या – 04

3 डॉ0 आर.पी.'राज', 'इ्श्क पे नाज़' की भूमिका, पृष्ठ संख्या – 05

4 रामचन्द्र वर्मा, संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, पृष्ठ संख्या – 66

5 डॉ. बच्चन सिंह, रीतिकालीन कवियो की प्रेम व्यंजन, पृष्ठ संख्या – 89

6 डॉ. नगेन्द्र, मानविकी पारिभाषिक कोश साहित्य खण्ड, पृष्ठ संख्या – 162

7 डॉ0 आर.पी.'राज', 'इ्श्क पे नाज़', पृष्ठ संख्या – 15

8 डॉ0 आर.पी.'राज', 'इ्श्क पे नाज़', पृष्ठ संख्या – 07

9 डॉ0 आर.पी.'राज', 'इ़श्क पे नाज़', पृष्ठ संख्या – 08

10 डॉ0 आर.पी.'राज', 'इ़श्क पे नाज़', पृष्ठ संख्या – 25

11 डॉ0 आर.पी.'राज', 'इ़श्क पे नाज़', पृष्ठ संख्या – 37

12 डॉ0 आर.पी.'राज', 'इ़श्क पे नाज़', पृष्ठ संख्या – 31

13 डॉ0 आर.पी.'राज', 'इ़श्क पे नाज़', पृष्ठ संख्या – 55

14 डॉ0 आर.पी.'राज', 'इ़श्क पे नाज़', पृष्ठ संख्या – 61

15 डॉ0 आर.पी.'राज', 'इ़श्क पे नाज़', पृष्ठ संख्या – 11

16 डॉ0 आर.पी.'राज', 'इ़श्क पे नाज़', पृष्ठ संख्या – 47